

## हिन्दू संस्कृति की धरोहर मिथिला की लोक चित्र कला

डॉ. कल्पना कुमारी

गेस्ट फैकल्टी

कालिंदी कॉलेज दिल्ली विश्व विद्यालय

संक्षिप्त सार –

प्रत्येक संस्कृति की अपनी एक सांस्कृतिक विरासत तथा उसकी विशिष्टता होती हैं। वैदिक काल से लेकर वर्तमान काल तक मिथिला अपनी एक विशिष्टता को संजोये हुए हैं। सम्पूर्ण आर्यावर्त में जो संस्कृति विकसित हुई उसमें मिथिला का योगदान अनुपम हैं। लोक-चित्रकला एक ऐसी कला है, जो अपने असीम स्वरूप में तत्कालीन समाज के सांस्कृतिक स्वरूप की असीम अभिव्यक्ति जनमानस के बीच प्रकट करता है। लोक-चित्रकला में ही जनमानस का आत्मिक भाव एवं अभिव्यक्ति निहित होती है। भारत जैसे विशाल देश में लोक चित्रकला की शुरुआत हजारों वर्ष पहले हुई थी। यहां की लोक-चित्रकलाएं अपनी मौलिक विशेषताओं के कारण अन्य देशों में मशहूर हुई हैं। यही कारण है कि यहां के लोक-चित्रों का अनुकरण विदेशों में भी समय-समय पर किया जाता रहा है। मिथिला सांस्कृतिक विरासत की दृष्टिकोण से सबसे महत्वपूर्ण मिथिला की लोक-चित्रकला है। मिथिला के प्रत्येक पर्व त्योहार सामाजिक एकता और संगठन के रूप में मैत्री पूर्ण भावना से मनाया जाता है। मिथिला में 'पर्व त्योहार' के अवसर पर यहां ग्रामीण अंचल में निवास करने वाली नारी अपने हाथों के उंगुलियों से भूमि पर रेखा चित्र का निर्माण करती है।

**बीज शब्द-** अरिपन चित्रांकन का विषय-वस्तु दो भागों में विभक्त होता है। पहले भाग के चित्रांकन में मुख्यतः देवी-देवता, वर-कन्या तथा अन्य सदस्यों को चित्रित किया जाता है। दूसरे प्रकार के चित्रांकन में मांगलिक चित्र, वृक्ष, लता, पशु-पक्षी, फूल आदि का चित्रांकन होता है। अष्टदल, सर्वतोभद्र, स्वस्तिक, षोडसदल कमल, चतुःशंख, सुखरात्रि, तुसारी, पृथ्वी, कल्याणदेई, दशपात, मौहक, मधुश्रावणी, गवहासक्रान्ति, उबटन, षष्ठी पूजा, कोजगरा, कोहबर आदि इसके विभिन्न प्रकार हैं। अरिपन-चित्रांकन सामान्यतः विशेष अवसर यथा उपनयन, विवाह, देवी-देवती की मूर्ति स्थापना, व्रत, पर्व-त्योहार, आदि में होता है। 'अरिपन' चित्रकला की अति प्राचीन रूप हैं इसका सम्बन्ध यज्ञ, पूजापाठ तांत्रिक साधना, अनुष्ठान एवं अन्य त्योहारों से हैं। अरिपन चित्रांकन के अनेक प्रकार हैं। - अष्टदल, सर्वतोभद्र, स्वस्तिक, षोडसदल कमल, चतुःशंख, सुखरात्रि, तुसारी, पृथ्वी, कल्याणदेई, दशपात, मौहक, मधुश्रावणी, गवहासक्रान्ति, उबटन, षष्ठी पूजा, कोजगरा, कोहबर आदि इसके विभिन्न प्रकार हैं। मिथिला लोक चित्रकला दो प्रकार के बनाये जाते हैं ये हैं ; 1 भूमिचित्र ; अरिपन, ; 2 भित्तिचित्र (Wall Painting)

### विस्तृत व्याख्या

भारतीय सांस्कृतिक लोक जीवन में राजा जनक एवं विदेह तनया सीता की पावन भूमि 'मिथिला' या तिरहुत का स्थान प्राचीनतम तथा विशिष्टतम है। उत्तर बिहार में नेपाल के तराईवर्ती क्षेत्रों के पास एक खास अंचल तक का भू-भाग मिथिला के नाम से विख्यात है। यह अंचल अपने शद्दाचार, विभव, न्यायप्रियता, आध्यात्मिक क्रियाकलाप एवं दयाशीलता के कारण भारतीय सांस्कृतिक लोकजीवन का सदियों से अभिन्न अंग रहा है। शद्दाचार एवं सात्विकता की खुशबू से महकता है तथा यहां का वातावरण मिथिलावासी के लोकजीवन में प्रयुक्त की जाने वाली वैदिक ऋचाओं, मंत्रों एवं लोकगीतों के स्वरो से गूजता है इस कारण यह

क्षेत्रा आध्यात्मिक विचारधाराओ, साहित्यिक एव दार्शनिक क्रियाकलापों तथा कलात्मक अभिव्यक्तियों का अनेक वर्षों तक केन्द्र रहा है। यहां का लोकजीवन अपने आप में आदर्श हैं। अनेक वर्षों तक इस भू-भाग में कला एवं संस्कृति के निरन्तर विकास होने के कारण इस क्षेत्र का प्रत्येक कण भारतीय संस्कृति का संवाहक बना हुआ है। कुछ पल इतिहास के पन्नों में झाकने पर प्रतीत होता है कि किसी भी समाज अथवा राष्ट्र की प्राचीन संस्कृति को अक्षुण्ण एवं जीवन्त बनाये रखने में सांस्कृतिक चेतना पीढ़ी-दर-पीढ़ी परिमार्जित और परिनिष्ठित होती है, जिसके फलस्वरूप समाज में संस्कृति का विकसित स्वरूप उभरता है। यह स्वरूप चाहे आध्यात्मिक भावनाओं पर केन्द्रित हो अथवा उपभोक्तावादी समाज में या फिर संसाधनों पर आत्मकेन्द्रित क्यों न हो। संस्कृति के इस स्वरूप को अंगीकृत कर कोई भी समाज अपने देश की सांस्कृतिक विकास यात्रा में योगदान देता है।

यहां की लोक- चित्रकलाएं अपनी मौलिक विशेषताओं के कारण अन्य देशों में मशहूर हुई हैं। यही कारण है कि यहां के लोक-चित्रों का अनुकरण विदेशों में भी समय-समय पर किया जाता रहा है। मिथिला सांस्कृतिक विरासत की दृष्टिकोण से सबसे महत्वपूर्ण मिथिला की लोक- चित्रकला है। जिसे मधुबनी चित्राकाल ,Madhubani Painting कहा जाता है। मिथिला के प्रत्येक पर्व त्योहार सामाजिक एकता और संगठन के रूप में मैत्री पूर्ण भावना से मनाया जाता है। मिथिला में 'पर्व त्योहार' के अवसर पर यहां ग्रामीण अंचल में निवास करने वाली नारी अपने हाथों के उंगुलियों से भूमि पर रेखा चित्र का निर्माण करती है। हमारी लोक कथाओं में प्रतिमाओं में लोक चित्रों में रेखांकनों और चित्रकारिता में सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक मान्यताओं को प्रकट करती है। किसी भी कला का अभिप्राय केवल नेत्रों को प्रमुदित आनंदित नहीं करती अपितु आत्मा को संस्कार परिष्कार और संतुष्टि प्रदान करना भी है तथा हमारे सौंदर्य बोध को परिष्कृत करने के साथ आत्मिक संतुष्टि देता है। मिथिला लोक चित्रकला दो प्रकार के बनाये जाते हैं ये हैं ;1 भूमिचित्र ;अरिपन;2 भित्तिचित्र ;Wall Painting

### भूमि चित्र अरिपन

लोक-चित्रकला एक ऐसी कला है, जो अपने असीम स्वरूप में तत्कालीन समाज के सांस्कृतिक स्वरूप की असीम अभिव्यक्ति जनमानस के बीच प्रकट करता है। लोक- चित्रकला में ही जनमानस का आत्मिक भाव एवं अभिव्यक्ति निहित होती है। मिथिला की अरिपन लोक-चित्राकला का सम्बन्ध धार्मिक एवं सामाजिक संस्कारों से है। ये चित्र भिन्न-भिन्न अवसरों पर भिन्न-भिन्न रूप में बनाये जाते हैं। इनमें यहां की चित्रकला कुछ खास शैली में बनते हैं जिसे हम 'मैथिल शैली'<sup>2</sup> के नाम से जानते हैं। अरिपन को मैथिलकवि कोकिल विद्यापति की रचना में उद्धृत किया गया है।<sup>3</sup> जिसमें विद्यापति आलपन के भावविशेष का वर्णन किया है –

ललातरुअर मण्डप जीति, निरमल ससधर धवलए भीति।  
हरि जब आओ गोकुलपूर, घरे-घरे बनाए जायतूर।  
अलिपन देओब मोतिम हार, मंगल कलश करब कुचहार।

हमारी लोक कथाओं में प्रतिमाओं में लोक चित्रों में रेखांकनों और चित्रकारिता में सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक मान्यताओं को प्रकट करती है। किसी भी कला का अभिप्राय केवल नेत्रों को प्रमुदित ,आनंदित नहीं करती अपितु आत्मा को संस्कार परिष्कार और संतुष्टि प्रदान करना भी है तथा हमारे सौंदर्य बोध को परिष्कृत करने के साथ आत्मिक संतुष्टि देता है। भारतीय संस्कृति और कला के सभी प्रतीक सामान्यरूप से मांगलिक होते हैं। वे आस्था और कल्याण की भावनाओं को समृद्ध करते हैं। आठ की संख्या

मांगलिक मानी गयी है। जिसे अष्टमंगलिक भी कहा जाता है। अरिपन' चित्राकला की अति प्राचीन रूप हैं इसका सम्बन्ध यज्ञ, पूजापाठ तांत्रिक साधना, अनुष्ठान एवं अन्य त्योहारों से हैं। अरिपन चित्रांकन के अनेक प्रकार हैं<sup>4</sup> - अष्टदल, सर्वतोभद्र, स्वस्तिक, षोडसदल कमल, चतुःशंख, सुखरात्रि, तुसारी, पृथ्वी, कल्याणदेई, दशपात, मौहक, मधुश्रावणी, गवहासंकान्ति, उबटन, षष्ठी पूजा, कोजगरा, कोहबर आदि इसके विभिन्न प्रकार हैं। अरिपन-चित्रांकन सामान्यतः विशेष अवसर यथा उपनयन, विवाह, देवी-देवती की मूर्ति स्थापना, व्रत, पर्व-त्योहार, आदि में होता है। मुख्य पात्रों के चित्रांकन में विशेष रूप से दुर्गा, गौरी, सूर्य, चन्द्र, सीता, राम, जनक, दरबार सहित यथा- कृष्ण, सांप नाग-नागिन बिच्छु, तांत्रिक स्वरूप नयना योगिन और पशु-पक्षी में सुग्गा, तोता, कछुआ, मछली, विशेष फूलों में कमल आदि हैं। इसको बनाने में मुख्यरूप से महिलाएं ही भूमिका निभाती हैं।

मैथिल-शैली के चित्र केवल भूमि को राजाने अथवा दीवार को सुन्दर बनाने के लिए ही नहीं बल्कि ये सब विभिन्न धार्मिक ग्रन्थों के गूढ़ तत्वों पर आधारित हैं।<sup>5</sup> इनकी रेखाएं, बिन्दू तथा रंग कोई न कोई विशेष तात्पर्य रखते रखते हैं जैसे कि रंगीन भीति चित्र जो खास कर कन्या-वर के शादी के अवसर पर बनाये जाते हैं, जो विशेष महत्व रखते हैं।

### कोहबर घर'

कोहबर विवाहोत्सव पर बनाये जानेवाला एक लोक चित्र है जिसे वर वधु के घर में अंकित किया जाता है। कोहबर शब्द कोह और वर के योग से बना है। कोह का अर्थ किसी कमरे का कोना बर का अपभ्रंश है। कोह का अर्थ किसी कमरे का कोना बर, वर का अपभ्रंश है। कोहबर एक भित्ति चित्र है। यह एक अत्यंत प्राचीन परम्परागत लोक चित्रण की शैली है। कोहबर घर का मुख्य चित्रण गोसाईं घर अर्थात् लोक देवी देवता घर है। जिसमें कुल देवता प्रायः स्थापित रहता है। दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करने से पहले कुल देवता की पूजा आश्यक है। कोहबर में मानव आकृतियाँ पेड़ पशु पक्षी लता जलचर मछली कछुआ, मिथुन प्रतीक, स्वास्तिक प्रतीक कामनाओं का प्रतीक शुभ का प्रतीक शांति का प्रतीक तेज का प्रतीक शीतलता का प्रतीक प्रेम का प्रतीक जैसे कि बांस का पेड़, कमल फूल और पता, मछली, सूर्य चन्द्रमा, तांत्रिक शक्ति नयना जोगिन आदि बनाया जाता है। मिथिला की लोकचित्राकला में एक चित्रांकन 'कोहबर घर' होता है, जिसमें तांत्रिक विधि अपनायी जाती है। 'कोहबर घर' के चित्र में एक बांस का चित्र बनाया जाता है। जो वर-वधु के वंश वृद्धि का सूचक है। एक नाग-नागिन होता है जो वर-वधु के बीच प्रगाढ़ प्रेम को दर्शाता है तथा बिच्छू का चित्र काम-उत्तेजना का सूचक है। 'नैना योगिन' तांत्रिक है यानी वह दो दृष्टिकोण से भावात्मक है। वर-वधु को किसी का कोई बाहरी प्रकोप न लगे, नैनायोगिन अपने सिद्धिबल से बचाती है। दूसरा, वर जो विवाह पूर्व - ब्रह्मचर्य है तथा वह ब्रह्मचर्य-आश्रम से गृहस्थ-आश्रम में प्रवेश करता है इस बीच वह नारी आकर्षण के प्रति अनभिज्ञ रहता है। इसमें नैना योगिन अपने मोहनी विद्या से वर को वधु के प्रति कामाचार-मोह उत्पन्न करती है। कोहबर घर के द्वार पर बाँस बृक्ष लगाया जाता है जो विवाहोपरांत वंश वृद्धि का द्योतक है। बिच्छू का चित्र का भाव जैसे डंक मारने से शरीर में कम्पन उत्तेजक हो जाता उसी प्रकार वर वधु के बीच कामोत्तेजना बढ़े। सांप में नाग नागिन का चित्र का भाव है आपसी अटूट प्रेम सम्बन्ध। मोर का चित्र जीवन नाचते खेलते सुखी जीवन रहे। इस प्रकार तांत्रिक प्रक्रिया का साथ साथ वर वधु सुखी जीवन सदा जीता रहे। इन सबका भाव नव दम्पति की भावी जीवन की मंगल कामना और मोहनी भाव प्यार वंस वृद्धि की इच्छा से होती है।

### पृथ्वी अरिपन

त्रिकोण के रूप में होता है जो पृथ्वी रूपी मातृशक्ति का सूचक है लड़की की शादी हो जाने के बाद स्त्रीयां कामना करती हैं कि पृथ्वी माता, अपनी पुत्री सीता ;जनक नंदनी की तरह हमें भी पतिव्रता, धर्मपरायण एवं कर्तव्यनिष्ठ बनावें। यह पूजा पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि तथा आकाशरूपी पंचतत्व से सृष्टि निर्मित हुई उसी का प्रतीक रूप में पूजा की जाती है।

### सांड अरिपन

मंदिर को त्रिकोण के रूप में बनाकर संध्यादेवी की पूजा ;अपभ्रंश-संज्ञामायद्ध की जाती हैं। मंदिर के नीचे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष रूपी चार पुरुषार्थ को तीन-तीन रेखाओं से घिरी चार सीढ़ियां बनायी जाती हैं। यह पूजा मिथिला के नारियों द्वारा गृहस्थाश्रम की भावना को इंगित करता है।

### तुसारी पूजा का अरिपन

अरिपन चित्रांकन का विषय-वस्तु दो भागों में विभक्त होता है। पहले भाग के चित्रांकन में मुख्यतः देवी-देवता, वर-कन्या तथा अन्य सदस्यों को चित्रित किया जाता है। दूसरे प्रकार के चित्रांकन में मांगलिक चित्र, वृक्ष, लता, पशु-पक्षी, फूल आदि का चित्रांकन होता है। अरिपन-चित्रांकन में 'तुसारी पूजा का अरिपन' मिथिला के स्त्रियों द्वारा चित्रित किया जाता है। इनमें भूमि पर त्रिशुल रूप तीन पतियो वाली ;दूर्बादल चित्र त्रिशक्ति

यथा सत्, रज, तम् गुणों के आधार पर बनाये जाते हैं। इसमें एक 'मठ' बनाया जाता है उस पर तीन कमल फूल का चित्र प्रातः, मध्याह्न, और संध्या त्रिकाल रूप बनाया जाता है। यह तुसारी पूजा माघ मकरसंक्रांति से फाल्गुण संक्रान्ति तक पूरे एक माह कल्प बना कर किया जाता है। 'तारायन्द्र चन्द्रिका' में वर्णित 'तुषार प्रभा भगवती' का वर्णन है जो तुसारी पूजा के नाम से मिथिला में प्रसिद्ध है।

### कल्याण देई पूजा अरिपन -

जिसमें कल्याण कारिका देवी तथा ब्रह्मों की पूजा की जाती है उसे मिथिला में 'कल्याण देई' पूजा कहा जाता है। कल्याण देई अरिपन का चित्रांकन तीन पतियो में किया जाता है। उपर प्रथम पक्ति में 'सूर्य', 'चन्द्रमा' और 'मठ' दूसरे मध्य पक्ति में 'गौर' तथा 'साठी' और नीचे अंतिम पक्ति में 'नवग्रह' के चित्र बनाये जाते हैं। यह अरिपन जमीन पर गोबर से 'कुमरम' तथा 'उपनयन' के दिन संध्या में बनाये जाते हैं। कल्याणदेई अरिपन में सूर्य, चन्द्रमा, के साथ मठ का चित्र त्रिशक्ति से युक्त पांच गुम्बज पंचलोक देवता के स्वरूप बनाया जाता है। नौ पत्तियों की पंखुड़ियां नौ ब्रह्मों को दर्शाती हैं। मिथिला की स्त्रीयां गौरी की तरह स्वच्छ निर्मल और महादेव जैसा एक निष्ठ पति उसे मिले।

### मधुश्रावणी पूजा का अरिपन -

श्रावण कृष्णपंचमी से लेकर श्रावण शुक्ल तृतीया तक मिथिला में नव विवाहिता वधू नागदेवता की पूजा करती हैं। इसमें एक सौ सर्पिणी का चित्र जो एक सौ एकान्त 'बहिन' कहलाती हैं। जिसमें 'कुसमावती' नागिन प्रमुख हैं तथा दूसरा दहिनी तरफ एक सौ नाग सर्प जो एक सौ भाई कहलाता है। जिसमें मुख्य 'बौरस' नाग होता है। इसके अतिरिक्त गौर, सूर्य, चन्द्र, साठी, नवग्रह के चित्र बनाये जाते हैं। इस मधुश्रावणी अरिपन चित्रांकन का मुख्य उद्देश्य सुहाग रक्षा और पतिप्रेम का प्रतीक रूप है।

### गवहा संक्रान्ति का अरिपन -

कार्तिक महीने की तुलाशशि की संक्रान्ति के दिन जो मिथिला में गवहा संक्रान्ति के नाम से जाना जाता है जिसे 'देवउठाउन' भी कहा जाता है। इसमें बीच अंगना से गोसाउनिक घर तक लम्बा सीढ़ि नुमा अरिपन किया जाता है जिसके शुरूआत में कमल का पफूल बनाया जाता है। सीढ़ि के बीच-बीच में पैसे का चिन्ह दिया जाता है जो गोसाउन घर के पीढ़ि, चौकाद तक होता है। इसका तात्पर्य है कि आज मैं कुल देवता घर आएं। पुरुषो का दशपात अरिपन में कार्तिकेय का वाहन मयूर का चित्र बनाया जाता है और पुष्पाकार परमेश्वरी रूपा आदि शक्ति का बिन्दूयुक्त अधोमुख त्रिकोण बनाया जाता है जो मातृशक्ति का बोधक है। यह दशपात अरिपन बनाने का तात्पर्य है सृष्टि में मानव शरीर धारण कर मनुष्य आत्म-शक्ति के द्वारा अष्ट सिद्धियों को प्राप्त कर अपने कर्तव्य का पालन कर सुयश को प्राप्त करे।

### सुखरात्रि अरिपन -

यह दिपावली के पूजा के अवसर पर बनाया जाता है। इसमें पूर्व में नारी द्वारा गोबर से चित्र बनाये जाते हैं और उस दिन पशु रक्षा की कामना करते हैं। इसमें सूर्य, नारायण, दोनों की पूजा एकात्मक रूप में की जाती है साथ ही इस अरिपन में हलवाहे का चित्र बनाया जाता है तथा एक नारी का चित्र जो झाड़ू से आँगन साफ कर रही है बनाया जाता है। चतुःशंख अरिपन में मिथिला में नारियों द्वारा 'देवोत्थान एकादशी' की पूजा के अवसर पर भगवान विष्णु की पूजा के लिए आँगन में अरिपन किया जाता है। जिसमें चार शंख बनाये जाते हैं जिसे चतुःशंख अरिपन कहते हैं। चतुष्कोण आयत क्षेत्रा भगवान नारायण का दोनो पद चिन्ह, काल, पुरुष और प्रकृति देवी के रूप में बनाये जाते हैं।

### स्वास्तिक अरिपन

मे मिथिला की नारी 41 स्वस्तिकों को आपस में जोड़कर बनाती हैं। स्वास्तिक अरिपन आशीर्वाद बोधक कामनापूर्ण होती है। यह भगवान विष्णु की चार भुजाओं का प्रतीक माना जाता है।<sup>10</sup> यह अरिपन कार्तिक पूजा, दुर्गापूजा के अवसर पर तुलसी पेड़ की चबूतरा के नीचे, दुर्गा मंदिर में महारात्रिरूपी महाष्टमी के दिन पीठार से बनाया जाता है। गुरुड़ पुराण में ये वर्णित है-'

### तुलसी रोपिता सिक्का दृष्टा स्पृष्टा च पावयेत्। आराधिता प्रयत्नेन सर्व काम-फल-प्रदा।'

यह अरिपन वैदिक यज्ञ में सर्वतोमद तथा यज्ञवेदी के बीच 'स्थाण्डिल' रूपी चबूतरे पर चित्रा बनाने की परिपाटी चली आ रही है। इसमें ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र की पूजा एक साथ करने का प्रचलन है। इस तरह मिथिला की नारियों के द्वारा मिथिला की लोक-चित्रकला जो किसी न किसी विशेष अवसर पर बनाये जाते रहे हैं। चार दिशाओं में व्याप्त विश्व मंडल का चतुर्भुजी रूप सूर्य से सम्बंधित है। यह मंडल प्राची एवं दक्षिणा प्रतीची और उदीची दिशाओं से बना है। सूर्य उसका मध्य है। प्राची प्रतीची एवं दक्षिणा और उदीची के विकास से स्वस्तिक बनता है। यह मानव एवं विश्व का सर्वोत्तम मांगलिक चिन्ह है। सूर्य का साथ जीवन के कल्याणमय रूप का प्रतीक स्वस्तिक है। वैदिक ग्रन्थ में यह दिशा को सूचित करता है। आगे के समय में लोक आस्था की कल्पना बदली तथा चार दिशाओं में चार लोक पाल मने जाने लगे। लोक पालों की पूजा और व्रत में स्वस्तिक की पूजा का विकास हुआ। लोक के अनेक देवता स्वस्तिक के चार दिशाओं से सम्बन्ध मान लिए गए, धृतराष्ट्र एम् गंधर्व पूर्व में एविरूढक दक्षिण में विरुपाक्ष एवं नाग पश्चिम में वैश्रवण या यक्ष उत्तर दिशा मान लिए गया। प्रत्येक वृत्त चक्र के कुक्षि में स्वस्तिक का रूप रहता है। यही 360 अहोरात्र है जिसमें काल चक्र या पृथ्वी के अक्ष चक्र का स्वरूप बनता है। स्वस्तिक को चतुष्पाद ब्रह्म का स्वरूप उपलक्षण का सकते हैं अथवा यह चतुर्भुज ब्रह्मरूप है जो विश्व का प्रजापति आधान और विधान करनेवाला है। स्वस्तिक विश्व कल्याण का प्रतीक भाव है।

### भित्ती चित्र कला –

ग्राम और जनपद भारतीय संस्कृति और कला की परम्पराओं को सहेज कर रखती आ रही हैं जबकि नगर और महानगर बाहरी संस्कृतियों के प्रभाव से संस्कृति और कला के मूल्यों को बदलते रहे हैं। लोक संस्कृति भारतीय संस्कृति की जड़ है। भित्ती चित्र हमें दो प्रकार की मिलती है – एक प्रकार का भित्ती चित्र मिथिला के कुलीन वर्ग के स्त्रीयों द्वारा प्रायः बनाया जाता है दूसरे प्रकार की भित्ती चित्र मिथिला के सामाजिक रूप से निम्न वर्ग की महिलाएं द्वारा अपने फूस के घर में मिट्टी के लेप से मूर्तियों उकेरी जाती हैं। भित्ती चित्र की परम्परा मिथिला के सभी जातियों में प्रचलित है। लोक संस्कृति से ही भारतीय संस्कृति पल्लवित, पुष्पित और फलित होती है। कला का प्रेरणा शक्ति लोक कला ही तो है। जिससे कला को प्रेरणा और नवीनता मिलती है। इस प्रकार मिथिला के ब्राह्मण, कायस्थ, दलित, हरिजन चित्रकारी करते हैं। मिथिला के स्त्रीयों द्वारा ही इस कला-कृति का निर्माण हुआ और इसका सम्बन्ध पारिवारिक एवं धार्मिक रीतिरिवाज से रहा है। इन चित्रा-कलाओं में गणेश, दूर्गा, काली, सीता-राम का विवाह, जनता दरबार,<sup>12</sup> बुद्ध द्वारा उपदेश<sup>13</sup> का चित्र, राध-कृष्ण का जलक्रीडा, विष्णु, गौरी, महादेव, दशावतार<sup>14</sup> आदि हैं। जीव-जन्तु, मानव तथा प्रकृति से सम्बन्धित बाघ, हिरण, मछली, कछुआ, मोर, तोता, बांस, कमल का पफूल, नाग-नागिन, बिच्छु आदि का चित्रा बनाये जाते हैं। भित्ती चित्र का दूसरा चित्रांकन मिथिला की निम्न वर्गीय महिलाओं द्वारा अपने घर के दीवार पर मिट्टी से गणेश, राम, सीता, राधा, कृष्ण, राजा सलहेस, महादेव, तुलसी पेड़, हाथी, हिरण, मोर, तोता, हाथी के पीठ पर सवार महथवार आदि का चित्र बनाया जाता है जिसे हरिजन शैली कहते हैं। अरिपन और भित्ती चित्रों के अतिरिक्त कुछ अन्य चित्रकलाएं हैं जिनमें निम्नवर्गीय महिलाओं में प्रचलित 'गोदना', गोदना पेंटिंग एवं सिक्की कला आदि हैं। अन्य चित्रकलाओं में कुम्हार, मिट्टी के बर्तन बनाने वाले मिट्टी के बर्तनों पर विभिन्न प्रकार के रंगीन चित्र बनाते हैं। इस प्रकार मिथिला की यह चित्रकला विभिन्न माध्यम से बनाये जाते हैं। सबसे बड़ी विशेषता है कि मिथिला की नारियों द्वारा यह चित्रकला सालों भर बनाई जाती है। जैसे – पूस-जनवरी में शुभ गौरी का चित्र बना कर नव विवाहिता औरतें पूजा करती हैं। माघ-फरवरी-वसंतपंचमी के अरिपन में हलवाहा का चित्र बनाया जाता है और हल की पूजा कर ढाई 2) गोड़ खेत जोता जाता है जिसे कृषि कार्य का शुभारम्भ कहते हैं। फागुन -मार्च में लक्ष्मी और सरस्वती की अरिपन बनाया जाता है जो सप्ता-विपता पर आधारित है। चैत-;अप्रैल में भगवान राम के जन्म कथा के आधार पर उनका बाल चित्रा अरिपन बनाया जाता है। वैशाख -मई में जनकी नवी का अरिपन' बनाया जाता है, जेष्ठ - जून में सावित्री सत्यवान का चित्रा बनाया जाता है। अषाढ़ -जुलाई में विष्णु और लक्ष्मी का हरसोई पूजा के रूप में अरिपन बनाया जाता है। श्रावण-;अगस्त में नाग-नागिन का चित्र मुख्यरूप से बनाया जाता है। नवविवाहिता इसे मधुश्रावणी के रूप में मानती हैं। भाद्र या भादव में -सितम्बर, चन्द्रमा चौथचन्द्र के चित्र गाय के गोबर के उपले से बनाया जाता है। अगहन ;नवम्बर-दिसम्बर में सूर्य का चित्र बना कर अग्नि को अर्घ्य दिया जाता जो नवान्न के रूप में होता है। मिथिला में विवाह संस्कार के समय लवहर, कुशहर, पुरहर, पातिल एवं उस पर विवाह मंडप पर अरिपन किया जाता है। यह विवाह संस्कार पद्धति तांत्रिक विधि से होता है। जिसमें शैव प्रतीक के रूप में व्याख्या करते हुए भाव स्पष्ट है। कि पुरहर -कलश पर - चित्रण और पातिल का इसमें प्रयोग होता है। पुरहर का मतलब त्रिपुरारी यानी शिव, पातिल-पार्वती का रूप, अरिपन के द्वारा प्रतीकात्मक कुण्डलिनी का प्रतीक कमलपफूल बनाया जाता है। जो हृदय का स्वरूप है तथा मणिपुर - नाभिकुण्ड है यह भाव शिव-पार्वती के एकात्मक भाव को दर्शाता है।

## निष्कर्ष

मिथिला की संस्कृति सर्वदा सभी बातों में खासकर नारी चरित्र-चित्रण में विदेह राजा सिरध्वज जनक तनया 'सीता' को आदर्श मानती आती है। मिथिला चित्रकला का वहां के लोगो पर गहरा प्रभाव पड़ा है। मिथिला में प्राचीन एवं मध्यकालीन युग से ही मातृका पूजा, देवी पूजा, एवं प्रकृति पूजा यहां के लोगो के धार्मिक जीवन की प्रमुख विशेषताएँ हैं। मिथिला की लोक चित्रकला भी अपने दैनिक जीवन में यौवन रूपों की अभिव्यक्ति देती है। इन चित्रकलाओं में मानव की मूल भावनाओं को पूर्ण अभिव्यक्ति मिली। इन क्रिया कलापो में धर्म का भी आश्रय लेकर जीव-ब्रह्म का सम्बन्ध बताया गया है। वहां पर काम की प्रधानता दृष्टिगोचर होती है। कोहबर की भित्ति चित्रकला में काम एवं दाम्पत्य-भाव की स्पष्ट झलक है। श्री लक्ष्मीनाथ झा चित्रकार<sup>15</sup> ने लिखा है - 'पूजा के समय लिखे जाने वाला अरिपन प्रकृति रूपा स्त्री की सृष्टि को धारण करने वाले, दीपदान की तरह वासनाओं की लौ से युक्त सृष्टि और संसार का द्योतक बनाया गया है। इस प्रकार मधुबनी लोक चित्रकला शिक्षा, संस्कृति, धर्म, तंत्र, दर्शन, पर्यावरण, जीव आदि सभी का समाहत समूह का धरोहर है। प्रयोग के तौर पर प्रथम व्यवसायीकरण करने का कार्य (J. Walter Thomson) थॉमसन कम्पनी प्राईवेट कलकत्ता 1957 में किया गया।<sup>16</sup> मधुबनी चित्रकला का व्यवसायिक रूप से चित्रांकन करने का कार्य मधुबनी शहर से उत्तर का गांव जितवारपुर के महापात्र ब्राह्मणों द्वारा शुरू किया गया।<sup>17</sup> 1962 ई. में लक्ष्मी नाथ झा द्वारा मिथिला की सांस्कृतिक लोक चित्रकला, मिथिला लोक चित्रकला की पहली पुस्तक सरिसब गाँव में छपी। 1967 ई. में उपेन्द्र महारथी और भास्कर कुलकर्णी ने मिलकर मधुबनी लोकचित्रकला को वहां के स्थानीय महिला से पेपर पर बनवाया और उसके व्यवसायिकरण की शुरुआत की। उस समय तत्कालिन वाणिज्य मंत्री ;भारत सरकार ललित नारायण मिश्रा द्वारा इस कला को प्रोत्साहित किया गया। मिश्रजी ने, फास के विद्वानों एवं कलाकारों को मधुबनी चित्रकला का लघु फिल्म बनाने के लिए उत्साहित किया। मधुबनी लोक-चित्रा को सबसे पहले मधुबनी के एस.डी.ओ. (W.G. Archer (I.C.S.)) ने इस आंचलिक लोक-चित्रकला से संसार के मानचित्र पर लाने का कदम उठाया।<sup>18</sup> मधुबनी लोक चित्रकला को 1948 ई. में लंदन शहर ;ब्रिटेन के Art Gallery में प्रदर्शित किया गया।<sup>19</sup> मिथिला की लोकचित्रा कला पर दो संस्कृतियों का समावेश है। इसमें वैदिक संस्कृति से धार्मिक भाव एवं बौद्ध संस्कृति से तांत्रिक विचार एवं चिन्ह ;कमल फूल, उर्द्धमुख कमल स्वारितक स्तूपाकार चिन्ह, आदि का समावेश है।

## संदर्भ ग्रंथ सूची

1. ये मधुबनी हैं-मधुबनी जिला प्रशासन, ;2003, पृ. 101, 200; झा इन्द्र नारायण मिथिला दिग्दर्शन,, कोडरमा, 1984, पृ.47;राम ,महेन्द्रनारायण,रमणअभिनंदनग्रन्थ,खुटौना,2004,पृ. 277-311;Thakur, U. , History of Mithila, Mithila Research Institute, Darbhanga, Sec. Ed., 1988, p.606.
2. झा,लक्ष्मीनाथ,मिथिला की सांस्कृतिक लोकचित्रकला,सरिसवपाही,दरभंगा,प्रथमभाग,1999, पृ. 1.
3. झा,इन्द्र नारायण ,मिथिला दिग्दर्शन, रामगढ़, 1984, पृ. 48.
4. ये मधुबनी हैं-मधुबनी जिला प्रशासन, ;2003, पृ. 101, 200; मिथिला दिग्दर्शन, इन्द्र नारायण झा, कोडरमा, 1984, पृ. 47,रमण अभिनंदन ग्रन्थ, डॉ. महेन्द्र नारायण राम, खुटौना, 2004, पृ. 277-31;Thakur, U. ,History of Mithila, Mithila Research Institute, Darbhanga, Sec. Ed., 1988, p.606.

5. झा,लक्ष्मीनाथ,मिथिला की सांस्कृतिक लोकचित्रकला,सरिसवपाही,दरभंगा,प्रथमभाग,1999, पृ. 2.
6. वही, पृ. 3/11.
7. वही, पृ. 4/10.
8. वही, पृ. 5.
9. वही, पृ. 3/11.
10. वही, पृ. 19/79.
11. वही, पृ. 19/79.
12. जनक दरबार, दरभंगा, मधुबनी, समस्तीपूर के रेलवे प्लेटफार्म पर चित्री हैं तथा भारतीय रेल ;जयंता, जनता एक्सप्रेस ;अब वैशाली में पूरी रेलगाड़ी के डिब्बों में बनी थी
13. बुद्ध तथा भिक्षुसंघ के बीच वार्ता एवं जन उपदेश – पटना रेलवे स्टेशन पर देखा जा सकता है।
14. दशावतार का चित्र, दरभंगा, मधुबनी रेलवे स्टेशन पर चित्रित है।
15. राम ,महेन्द्रनारायण,रमणअभिनंदनग्रन्थ,खुटौना,2004 पृ. 278.
16. वही, पृ. 198.
17. "The Mahapatra Brahmin of Jitwarpur developed and independent style (with colour brush) of Paintings and enter the main stream of the commercial revolution take of place in the market for the folk and motif." ये मधुबनी हैं, मधुबनी जिला प्रशासन, 2003, p. 199.
18. ये मधुबनी हैं – मधुबनी जिला प्रशासन, 2003, पृ. 198.
19. वही, पृ. 198.

\*\*\*